thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 22 रोहतक, 7 नवम्बर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

ईश्वर से मांगने योग्य वस्तु केवल एक सद्बुद्धि है

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

संसार में सबसे श्रेष्ठ वस्तु जो ईश्वर से मांगने योग्य है, तो वह है सद्बुद्धि। क्योंकि सभी श्रेष्ठ कार्यों को करने के लिए श्रेष्ठ बुद्धि अनिवार्य है। बुद्धि तो सबके पास है परन्तु सद्बुद्धि बहुत कम लोगों के पास है।

बुद्धि और सद्बुद्धि में अन्तर

इसके लिए कुछ उदाहरण आपके सम्मुख रखने का प्रयास करूंगा। **बुद्धि**-जिसके पास बुद्धि है उसकी ईश्वर के विषय में मान्यताओं पर विचार करें। श्रीराम और श्रीकृष्ण जी को ईश्वर का अवतार मानते हैं, जिसमें सबसे ज्यादा मान्यता श्रीकृष्ण जी की है। अब देखिये! कृष्ण जी को अवतार मानने वाले उनके विषय में क्या कहते हैं। सुनिये! कृष्ण जी ने माया से आकाश को बादलों से ढक दिया, इतने में राधा श्रीकृष्ण के पास आ गई, वहाँ राधा ने रत्नों से जड़ित माया से बनी अति सुन्दर मण्डप देखा तथा कामयुक्त अति सुन्दर श्याम को शैय्या पर लेटे देखा। उस सुन्दर नौजवान को देखकर चकित हो गई। राधा को देखकर कृष्ण जी ने उसे पलंग पर लेटने को कहा। वह जब लेटने लगी तो ब्रह्मा जी ने प्रकट होकर राधा का हाथ कृष्ण के हाथ में दे दिया। ब्रह्मा जी राधा और कृष्ण को प्रणाम करके अपने घर चले गए। कृष्ण जी ने राधा को खींचकर अपने पास लिटा दिया। कृष्ण जी तुरन्त कामवश हो गये और उसके वस्त्र ढीले कर दिये। उसके बाद जो दृश्य वर्णित किया गया उसे लिखने की मेरी लेखनी अनुमति मुझे नहीं दे रही है। महायोगेश्वर श्रीकृष्ण जिसकी पत्नी रुक्मिणी थी, वेदशास्त्रों के ज्ञाता भला इतना बड़ा दुष्कर्म कर सकते थे क्या? आप स्वयं निर्णय कीजिये कि क्या कृष्ण जी जिसने 14 वर्ष वन में तपस्या करने के बाद एक वीर सन्तान पैदा की थी, उच्च कोटि का तपस्वी, ज्ञानी, वेदों का ज्ञाता, ऐसा नीच कार्य कर सकता है क्या? कभी नहीं। जिसने इस प्रकार का कथन लिखा उससे नीच व्यक्ति इस संसार में और कौन हो सकता है, इतना अत्यन्त नीच कार्य महाभ्रष्ट आचरणहीन व्यक्ति ही कर सकता है। जिसने ये कुकर्म किया उसके पास बुद्धि तो थी, परन्तु सद्बुद्धि नहीं, कुबुद्धि थी। सद्बुद्धि तो ईश्वर उसको ही देता है, जो उसके सत्य स्वरूप को समझते हैं। उनके सत्य स्वरूप, गुण, कर्म, स्वभाव को महर्षि दयानन्द ने समझा तो ईश्वर ने उन्हें सद्बुद्धि दे दी। महर्षि दयानन्द ने सद्बुद्धि से श्रीकृष्ण जी की उक्त कहानी पर गहराई से विचार किया और उक्त पर टिप्पणी करते हुए सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में लिखा। योगिराज श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उसका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों जैसा है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण, श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त नहीं किया तथा बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा कहीं भी नहीं लिखा है। परन्तु भागवत् पुराण वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम पर स्त्रियों से रासलीला और समागम जैसे मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी पर लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा के और सुनकर अन्य मतों वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत निन्दा करते हैं। यह भागवत वाले ऐसे दोष न लगाते तो श्रीकृष्ण जी जैसे महान् महात्माओं की झूठी निन्दा न होती। यह अन्तर है बुद्धि और सद्बुद्धि में। बुद्धि तो भागवत बनाने वालों में भी थी, परन्तु सद्बुद्धि न होकर कुबुद्धि थी। सद्बुद्धि महर्षि दयानन्द जी के पास थी जिससे झूठ का पर्दाफास किया कि जिस रूप में पुराण वाले ने श्रीकृष्ण का वर्णन किया है, कितना शर्मनाक, अपमानजनक है। जबकि श्रीकृष्ण जी तेजस्वी, ज्ञान के भण्डार, सत्य में पूर्ण निष्ठा रखने वाले, ईश्वर के उपासक, श्रेष्ठतम नीतिकार के सम्बन्ध में झूठे आरोप/दोष लगाये हैं। इस प्रकार की पुस्तकों को पढ़कर संसार में बलात्कार की घटनाएं घट रही हैं। शायद कुछ बाबे भी यही मानकर बलात्कार कर रहे हों कि जब श्रीकृष्ण जी ऐसा करते थे तो इसमें दोष ही क्या है? कुछ माताओं बहनों को श्रीकृष्ण जी के विषय में गन्दे/भद्दे गीत गाते सुना है। जैसे- 'मैं तो कान्हा से अंखियां लड़ा आई रे।' इस प्रकार के श्रीकृष्ण और राधा के विषय में गीत गढ़ रखे हैं, जो झूठे निराधार और असत्य पर आधारित हैं तथा अशोभनीय हैं। दूसरा उदाहरण श्री गणेश जी के विषय में है, श्री गणेश जी की पूजा तो श्रीकृष्ण और श्रीराम के भक्त भी करते हैं। लगता है ऐसा है कि लोगों के पास थोड़ी बहुत विचार करने के लिए बुद्धि तो है, परन्तु जो है उसका भी लोग दिवाला निकाल चुके हैं। आप सब जानते ही हैं कि जब किसी का दिवाला निकल जाता है तो उसकी स्थिति क्या होती है, वही स्थिति समाज के अधिकतर लोगों की है।

श्रीगणेश जी, जिनको आप नवग्रह पूजा के समय मुख्य देवता मानकर पूजा, अर्चना करते हैं। उनका पुराण वाले क्या स्वरूप प्रस्तुत करते हैं, जरा ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता है। गणेश माता पार्वती के शरीर के मैल से बना श्री गणेश जी ने अपने पिता जी को पीट दिया, ब्रह्मा जी की दाढ़ी खैंच डाली, विष्णु और शंकर को भी नहीं छोड़ा तथा उनकी भी डण्डे मारकर सेवा कर दी। इतने बड़े-बड़े अवतारों के साथ दुर्व्यवहार किया। इस पर शिव ने गणेश का सिर काट दिया तथा पार्वती के क्रोधित होने पर उन्होंने एक दांत वाले हाथी का सिर काटकर गणेश जी के धड़ पर रख दिया और लिखा है कि गणेश जी चूहे पर सवारी करते थे। सामान्य बुद्धि रखने वाले जो बुद्धि थोड़ी बहुत है उसको भी काम में न लाने वाले, जो केवल सुन या पढ़कर बिना विचारे ही, बिना ठीक-गलत का निर्णय किये ही वगैर सत्य-असत्य को जाने बिना ही ठीक या सत्य मान बैठते, वे ही इस प्रकार की झूठी मनघड़न्त बातों पर विश्वास करते हैं, इसको विश्वास नहीं कहते, अन्धविश्वास कहते हैं। क्या उक्त बातें संभव हैं।

तीसरा उदाहरण शिवलिंग पूजा

बड़ी ही अशोभनीय है, लोग इसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं और बुद्धिमान् इसकी सच्चाई को जान लेवें तो कभी अपने जीवन में इस अपराध को न करें। पुराण वालों ने जनता को कितने घोर अन्धकार में फँसाकर असत्य के मार्ग पर लाकर विनाशकारी कार्य को करने के लिये छोड़ दिया है, शिवपुराण, रुद्र संहिता, अध्याय 11 में लिखा है—

गिरिजा योनिरूपां च संस्थाप्य शुभ पुनः।
तत्र लिंगं च तत्संस्थाप्य पुनश्चैकभिमन्त्रमेत्॥

पार्वती के गुप्तांग की नकल की जलहरी बनाकर फिर उसमें लिंग को स्थापित करके उसकी पूजा करें।

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

एक मुलाकात स्वामी दयानन्द से

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

प्रात:काल का समय था, दरवाजे पर खटखटाहट हुई। इतने प्रात: कौन आ सकता है! कितनी ही आशंकाओं से भरा हुआ मैं द्वार खोलता हूँ, क्या देखता हूँ कि एक संन्यासी मुझे देखकर जिज्ञासा भाव से मुस्करा रहा है। अभी मैं न तो गहरी नींद में था और न स्पष्टत: जागा। यह क्या? एक तेज रोशनी मेरी आँखों में पड़ती है, मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आ रहा था कि जिस व्यक्ति की हर जगह पर जय-जयकार बोली जा रही है। वही विशालकाय संन्यासी मेरे सम्मुख खड़ा है। वह संन्यासी मन्द-मन्द मुस्करा रहा है और मैं असमंजस में पड़ा हुआ कभी अपने आपको और कभी उस संन्यासी को देख रहा हूँ। मुझे विश्वास नहीं आ रहा था। अरे! उन्हें तो स्वर्ग सिधारे 131 वर्ष हो चुके हैं। वे इस रूप में कैसे आ सकते हैं? मैंने अपने आप को संभाला और वे संन्यासी मुस्कुराते हुये कहने लगे, 'आर्य जी! घबराने की कोई बात नहीं। मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती हूँ।' उनके ऐसा कहते ही मैं अचम्भे में पड़ गया परन्तु इससे पूर्व मैं और अधिक परेशानी अनुभव करता उन्होंने कहा, 'आर्य जी! मैं आपके सामने कुछ प्रश्न रखना चाहता हूँ। उनके मुझे उत्तर दीजिए।' यह कहते ही वह मेरे कन्धे पर हाथ रखकर धीरे-धीरे चलते हुये मेरे अतिथि गृह तक पहुंच गये और मुझे अपने सामने बिठाकर ये प्रश्न करने लगे—

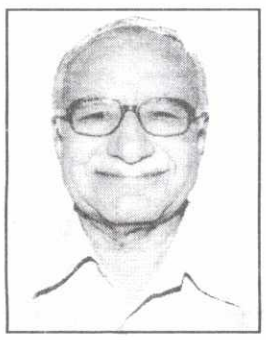

कन्हैयालाल जी आर्य

(1) मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल आपके हाथों में दी थी, क्या वह मशाल जल रही है या बुझने के कगार पर है?

(2) जिस जाति-पाति का मैंने जीवन भर विरोध किया था, क्या तुम उन्हीं की जातिसूचक का प्रयोग करके डींग नहीं मारते हो?

(3) जिन नियमों-उपनियमों के आधार पर मैंने आर्यसमाज की नींव रखी थी क्या तुम इस नींव को खोखला करने में नहीं लगे हो?

(4) मैंने तुम्हें श्रेष्ठ-सीधा-सच्चा व वेद-मार्ग दिखाया था जो प्रभु का आदेश, उपदेश और सन्देश है, उसका तुम्हें आधार दिया था। उसके प्रचार-प्रसार का कार्य छोड़कर क्या तुम भी आर्यसमाज के रूप में भवनों, दुकानों, स्कूलों और बारात घर की पंक्तियां नहीं सजा रहे हो?

(5) मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल तुम्हारे हाथों में दी थी, क्या तुम उसे आर्यसमाज मन्दिर में बने स्कूल, दुकान, बरात घर व औषधालय के कोने में रखकर **'वेद की ज्योति जलती रहे'** व **'ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे'** बोलकर शांति पाठ नहीं करा रहे हो?

(6) साप्ताहिक कार्यक्रम को तुमने इतना नीरस बना दिया है कि हवन किया, दो भजन बोले, सूचना दी और कार्यक्रम की इतिश्री कर दी। क्या इसी हेतु मैंने आर्यसमाज की स्थापना की थी? वेद पढ़ने-पढ़ाने की बात तो दूर, तुमने सुनना और सुनाना भी बन्द कर दिया।

(7) क्या तुम महापुरुषों के चित्रों के नीचे कव्वालियों और लड़कों और लड़कियों के नाच नहीं करा रहे हो?

(8) भजन-सन्ध्या के नाम पर मूर्तिपूजा जैसे भयंकर पाप को क्या तुम नहीं कर रहे हो?

(9) वेदप्रचार की बजाय गीता ज्ञान की कथायें क्या तुम्हारे आर्यसमाज में नहीं हो रही हैं? आज गीता कथा करने वाले विद्वान् तुम्हारे आर्यसमाजों में अधिक सम्मान प्राप्त कर रहे हैं और वेदकथा कहने वाले विद्वान् उपेक्षित। ऐसा क्यों?

(10) जिस सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को मैंने जनकल्याण व वेदप्रचार हेतु बड़े परिश्रम से लिखा था उसे घर-घर पहुँचाने की अपेक्षा क्या अपने पुस्तकालयों की आलमारियों में तुमने बन्द नहीं कर दिया है?

(11) मैंने जिन पाखण्डों, गुरुडम, अज्ञान आदि को दूर करने के लिए सत्रह बार विष पीया, क्या तुम उन्हीं पाखण्डों का शिकार नहीं हो गये थे? क्या तुम्हारे प्रत्येक के घर में वैदिक विचार के स्थान पर गुरुडम ने स्थान नहीं ले लिया है? क्या तुमने कभी वैदिक ज्ञान प्राप्त कर अज्ञानता को दूर करने के लिए समय निकाला है?

(12) क्या तुम पद-मान-महत्त्व और सत्ता के लिए दिन-रात योजनायें नहीं बनाते रहते हो? तुम गुटबाजी में ऐसे फँसे हो कि दूसरे पक्ष का व्यक्ति कितना ही वैदिक धर्म अनुयायी, स्वाध्यायी, सेवाभावी, सत्संगी क्यों न हो? तुम्हें इसलिए नहीं भाता कि तुम्हारे गुट का नहीं है। क्या यह बात ठीक है?

(13) तुम्हारी इस चुनावी जंग को देखकर श्रद्धालु, भावनाशील और विचारों, सिद्धान्तों को प्यार करने वाले क्या तुमसे अलग नहीं होते जा रहे?

(14) जिस सहशिक्षा और अंग्रेजियत की शिक्षा का मैं विरोधी रहा, वही सब कुछ मेरे नाम पर खड़े किये गये डी.ए.वी. स्कूलों व समाज मन्दिरों में क्या तुम नहीं कर रहे हो? क्या तुम गुरुकुल खोलने के स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा के आधुनिक स्कूल खोलने पर अपनी ऊर्जा नहीं लगा रहे हो?

(15) जिन दैनिक यज्ञ आदि पांच महायज्ञों को प्रतिदिन न करने वालों को कृतघ्न और पापी कहा जाता है, क्या तुमने उन यज्ञों को त्याग नहीं दिया?

(16) क्या तुम आधुनिकता की होड़ में आश्रमों व गुरुकुलों में मेरे द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रमों को तिलांजलि नहीं दे रहे हो?

(17) मैंने सुना है प्रतिदिन लाखों गायों की हत्या यहाँ पर हो रही है। क्या तुमने कभी उसका प्रतिवाद किया? क्या प्रतिदिन तुम 'गाय माता की जय हो', 'गाय की रक्षा हम करेंगे' नारे लगाकर मुझे धोखा नहीं दे रहे हो? क्या तुम्हारे घर में तुम और तुम्हारे बच्चे गाय का दूध सेवन करते हैं? क्या गोशालाओं में कभी तुमने सहयोग किया? क्या तुम स्वयं बूढ़ी गाय को थोड़े से धन के लालच के लिए कसाइयों के हाथ नहीं बेच देते हो?

(18) जिस मूर्तिपूजा का विरोध करने के कारण और किसी लोभ में न पड़कर मैं विरोधियों का कोपभाजन बना हूँ, क्या तुम्हारे ही आर्यसमाज मन्दिरों में मेरी ही मूर्ति पर हार नहीं चढ़ाने लगे हो? और तो और थोड़े से धन के लालच में कुछ धनपतियों को जिन्हें तुम जानते हो कि यह मूर्तिपूजक है, फिर भी उन्हें आर्यसमाज के पदाधिकारी बनाकर अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को शान्त नहीं कर रहे हो?

(19) जिन मांस-भक्षकों के घर पर पानी पीने से भी मैंने मना किया था, क्या तुम उन्हीं मांसाहारियों और शराबियों को मालायें पहनाकर समाज के सदस्य बनाकर आर्यसमाज को क्लब बनाने का प्रयास नहीं कर रहे हो?

(20) पचास वर्ष की आयु के पश्चात् वानप्रस्थ और 75 वर्ष की आयु के पश्चात् संन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर समाज की सेवा का जो संकल्प मैंने तुम्हें वेदानुसार बताया था, क्या तुमने उसके पालन में जरा भी रुचि दिखाई?

(21) अपने जीवन में साधना, स्वाध्याय की बजाय जीवन भर धन कमाने, भौतिक सुविधाओं, वासनामय जीवन व्यतीत करना, क्या तुमने अपने जीवन का उद्देश्य नहीं बना रखा है?

(22) सन्ध्या के छह मन्त्रों (मनसा परिक्रमा मन्त्र) में **'यं वयं द्विष्मस्तं वा जम्भे दध्म:'** को प्रात: सायं तोते की तरह रटते तो तुम रहे, क्या तुमने ईर्ष्या-द्वेष के भाव को प्रभु के प्रति समर्पित किया?

(23) जो मैंने तुम्हें आर्यसमाज के माध्यम से श्रेष्ठतम विचारों का चिन्तन दिया था क्या तुमने उसे बहुत संकीर्ण एवं सीमित नहीं कर दिया है? क्या तुमने आर्यसमाज मन्दिरों को जलसे, जुलूसों व लंगरों तक सीमित नहीं कर दिया?

(24) क्या तुम किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मृतक व्यक्ति के वजन के बराबर घी और सामग्री डालने की बजाय एक या आधा किलो घी और आधा या एक किलो सामग्री डालकर मृतक के शव को अग्नि को अर्पित नहीं कर रहे हो?

(25) क्या तुम चौथे के दिन मृतक की अस्थियां अलग कर और राख अलग कर हरिद्वार ले जाने का काम नहीं कर रहे हो? जिस हरिद्वार को मैंने हाड़ का द्वार कहा था क्या तुम उसी हरिद्वार में अस्थियां ले-लेजाकर पण्डे-पुजारियों के हाथों नहीं लुट रहे हो?

(26) श्रद्धांजलि दिवस के अवसर पर क्या तुम मृतक के चित्र पर माला नहीं चढ़ा रहे हो? उसके चित्र के सामने फूल रखकर लोगों से मूर्तिपूजा नहीं करा रहे हो? किसी देवी-देवता या मृतक के चित्र को रखकर उन पर पैसे नहीं चढ़वा रहे हो? यदि ऐसा कर रहे हो तो क्या तुम मेरी हत्या नहीं कर रहे हो?

(27) क्या तुमने अपने बच्चों की जन्म-पत्रियां बनवानी प्रारम्भ नहीं कर दी? जिन जन्मपत्रियों को मैंने शोकपत्री कहा था उन्हीं जन्मपत्रियों को को बनवाकर क्या तुम ढोंग और पाखण्ड

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

सज्जन पुरुष के लक्षण

गतांक से आगे.....

महापुरुषों के चरित्र विचित्र होते हैं। वे लक्ष्मी अर्थात् धन-सम्पत्ति को तिनके के समान मान उसमें आसक्त नहीं होते और यदि घर में लक्ष्मी आ जाये तो उसके भार से विनम्र हो जाते हैं और—

पानी बाढ्यो नाव में घर में बाढ्यो दाम।
दोनों हाथ उलीचिए यही सयानो काम॥

बढ़ी हुई लक्ष्मी को अच्छे कार्यों में दान करते रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं—

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

दान, भोग, नाश, ये धन की तीन गतियाँ हैं। जो दान नहीं करता और परिवार की उन्नति में नहीं लगाता उसकी तीसरी गति अर्थात् नाश ही होता है।

२. **मन्द्रजिह्वम्**—जिसकी वाणी मधुर है वह सज्जन पुरुष जानना चाहिये। नीतिकार कहते हैं—

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवाद सस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय॥

यदि एक की कार्य से सारे संसार को वश में करने की इच्छा है तो दूसरे की निन्दा रूप खेती में चरती हुई अपनी वाणी रूप गाय को वापिस बुला लो। तुलसीदास जी ने भी यही बात कही है—

कागा काको लेत है कोयल काको देत।
तुलसी मीठे वचन से जग अपनो कर लेत॥

कव्वे की कांव-कांव को सुन सब उसे पत्थर मारते हैं और कोयल अपनी मधुर वाणी से सबकी प्रिय बन जाती है। इसलिये **सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात्** प्रिय सत्य बोलें अप्रिय नहीं।

क्रमशः अगले अंक में....

युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न

वैदिक धर्म की रक्षा में अहर्निश सेवारत गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रांगण में 7 अक्तूबर 2014 को विजयदशमी के अवसर पर युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न हुआ।

इस शिविर का शुभारम्भ 2 अक्तूबर को नुआपड़ा जिले के यशस्वी विधायक श्री बसंत भाई पण्डा के करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन द्वारा हुआ। इस शिविर में छत्तीसगढ़, उड़ीसा से 200 आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में उन्हें आत्मरक्षा के उपायों के साथ-साथ चरित्र निर्माण का भी प्रशिक्षण दिया। शिविर का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचारमंत्री श्री चन्द्रदेव जी तथा आचार्य मुकेश जी ने दिया।

षड्दिवसीय इस शिविर में अनेक आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर शराब, मांस, नशा सेवन से दूर होकर आजीवन देश, धर्म की रक्षा करने का संकल्प लिया।

शिविर में गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, उपाचार्य डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी, वा. विशिकेशन जी शास्त्री, आचार्य रणजीत जी 'विवित्सु', आ. मनुदेव वाग्मी तथा विश्वामित्र जी 'मुमुक्षु' का भी विशेष सहयोग रहा। शिविर के आयोजन की सारी व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई।

समापन समारोह 7 अक्तूबर को गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक एवं संचालक स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर श्री शरच्चन्द्र जी शरत् (उपजिलापाल, नुआपड़ा), श्री राजूभाई धोलकिया (पूर्व विधायक, नुआपड़ा), सीआरपीएफ कमाण्डर श्री प्रधान जी, श्री सुरेश अग्रवाल जी, डॉ. केवलचन्द्र जी साहू आदि अनेक आर्यसज्जन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी तथा आनन्द कुमार जी शास्त्री ने किया। पुरस्कार वितरण उपरान्त मध्याह्न 2 बजे शान्तिपाठ पूर्वक यह कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

-डॉ. कुञ्जदेव जी 'मनीषी' संचालक,
उत्कल प्रान्तीय आर्यवीर दल

शिक्षा से ही मिलती है जीवन को सही दिशा

आर्यसमाज द्वारा स्कूली छात्र-छात्राओं को पाठ्यसामग्री का वितरण

कोटा, 1 नवम्बर। शिक्षा ही मनुष्य को मानव बनाती है तथा शिक्षा से ही जीवन को सही दिशा मिलती है। उक्त विचार आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने रथकांकरा गांव में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय रथकांकरा में छात्र-छात्राओं को आर्यसमाज की ओर से पाठ्य सामग्री वितरण के एक संक्षिप्त कार्यक्रम के आयोजन में अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने बच्चों को नशों से दूर रहने तथा अपने माता-पिता को भी इस प्रवृत्ति से दूर रखने हेतु कोशिश करने की सलाह दी। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय के प्रधानाध्यापक नरेन्द्र निर्मल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा बताया कि इस विद्यालय में सभी बच्चे आदिवासी गरीब भील परिवारों के हैं तथा आर्यसमाज ने यहां आकर हमें संबल प्रदान किया है। आर्यसमाज के दल ने अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में यहां आकर बच्चों को कॉपी, पेन, पेन्सिल, रबर, कटर आदि पाठ्य सामग्री का वितरण किया। इस अवसर पर वेदप्रचार समिति के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने बच्चों को गायत्री मंत्र का सामूहिक पाठ करवाया तथा इसका अर्थ बताकर उनका ज्ञान बढ़ाया। आर्यसमाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस. दुबे ने वेदज्ञान का सरल परिचय देते हुए बच्चों को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। वैदिक विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने विद्या प्राप्ति, विनम्रता तथा आज्ञापालन आदि बातों को सरलता से समझाते हुए सफलता प्राप्ति का साधन बताया।

अतिथियों द्वारा विद्यालय के प्रधानाध्यापक नरेन्द्र निर्मल को स्कूल की लाइब्रेरी के लिए महर्षि दयानन्द कृत अमरग्रंथ सत्यार्थप्रकाश भेंट किया गया।

विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती रंजना नामा ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा आग्रह किया कि भविष्य में भी आर्यसमाज द्वारा इसी प्रकार सहयोग एवं मार्गदर्शन उनके विद्यालय को मिलता रहेगा।

-अरविन्द पाण्डेय प्रचार सचिव

वेदप्रचार मण्डल हिसार द्वारा दीपावली पर्व पर यज्ञों का आयोजन

वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा दीपावली पर्व पर सैक्टर-14 में श्री सज्जन कुमार गर्ग प्रधान गोशाला मिंगनी खेड़ा के घर पर यज्ञ किया गया। उन्होंने आत्मा परमात्मा व दीपावली पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

मंडल के संरक्षक आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री द्वारा दीपावली पर्व पर वेदप्रकाश आर्य की शक्तिवर्धक बीज की दुकान पर यज्ञ किया गया। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। आचार्य पं० रामस्वरूप जी ने दूसरा यज्ञ हिसार सैक्टर-14 में श्री प्रधान रामकुमार आर्य के मकान पर यज्ञ किया। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला। मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष वैदिक युवा विद्वान् आचार्य प्रमोद योगार्थी द्वारा हिसार गीता कालोनी में इन्सपैक्टर चौ० निहालसिंह आर्य के मकान पर दीपावली पर्व पर यज्ञ किया गया। आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन व कार्य पर प्रेरणा दायक संस्मरण सुनाए। उपस्थित लोगों ने महर्षि की जीवनी तथा सत्यार्थप्रकाश पढ़ने का सुझाव दिया। मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही द्वारा दीपावली पर्व तथा श्री राजवीर आर्य के 37वें जन्मदिवस पर आर्य निवास नलवा में यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने आर्य को आशीर्वाद दिया तथा महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। 24.10.2014 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में सन्ध्या व यज्ञ के उपरान्त आचार्य प्रमोद योगार्थी ने नामकरण संस्कार तथा विश्वकर्मा के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री रामकुमार आर्य व वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही भी उपस्थित थे। उपरोक्त कार्यक्रमों में परिवारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

-कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री
वेदप्रचार मण्डल हिसार

thearyasamaj.org

हमारा स्वर्णिम अतीत और देश की अवनति के कारणों पर विचार

❑ मनमोहन कुमार आर्य

संसार में वैदिक धर्म व संस्कृति सबसे प्राचीन है। इसका आधार चार वेद-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद हैं। वेदों का लेखक कोई मनुष्य या ऋषि-मुनि नहीं अपितु परम्परा से इसे ईश्वर प्रदत्त बताया जाता है। वैदिक प्रमाणों एवं विचार करने पर ज्ञात होता है कि सृष्टि की रचना होने के बाद जैविक व प्राणी सृष्टि हुई जिसमें वनस्पति जगत के बाद प्राणी जगत के अन्तर्गत पशु, पक्षी तथा कीट पतंग की अमैथुनी सृष्टि हुई। इनके बाद अन्तिम अमैथुनी सृष्टि मनुष्यों की हुई। मनुष्यों की अमैथुनी सृष्टि की न केवल सम्भावना है अपितु इसका उल्लेख वैदिक साहित्य में उपलब्ध होता है। हम आजकल देखते हैं कि मनुष्येतर जीवयोनियों, पशु, पक्षियों, कीट व पतंगों आदि को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए किसी भाषा व नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। उनका काम ईश्वर से उन्हें प्राप्त स्वाभाविक ज्ञान से चल जाता है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो उसे माता के दुग्ध का पान करने व भूख व पीड़ा होने पर रोने के अतिरिक्त किसी प्रकार का कोई ज्ञान नहीं होता। इससे अधिक वह अपने हाथ पैरों को पटकता रहता है। माता उसे गोद में दुग्धपान कराने के साथ उसे पुचकारती व दुलारती है तथा भांति-भांति के गीत व लोरियां आदि सुनाती रहती है जिससे वह अपनी माता की आवाज व भाषा से कुछ-कुछ परिचित होना आरम्भ करता है। कुछ महीनों में वह माता की आवाज को पूरी तरह से समझने लगता है और पिता की भी ध्वनि को अनुभव करने लगता है। धीरे-धीरे उसका ज्ञान बढ़ने लगता है। वह न केवल शब्दों को सुनकर पहचानने लगता है वरन उसे प्रेरित करने पर वह छोटे-छोटे शब्दों को बोलने भी लगता है। आयु वृद्धि के साथ वह अपनी माता व पिता से कुछ-कुछ नई बातें सीखता जाता है परन्तु परिवार व समाज के लोगों के साथ समान्य व विशेष रूप से ज्ञानपूर्वक व्यवहार करने के लिए उसे आचार्यों की आवश्यकता होती हैं जो उसे विद्यालय में प्राथमिक कक्षा से आरम्भ करके भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान कराते हैं। विद्यालयों में भिन्न-भिन्न विषयों को पढ़कर वह नाना प्रकार के व्यवहार, कार्य व व्यवसाय करने में दक्ष हो जाता है।

सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में युवावस्था में उत्पन्न हमारे आदि पूर्वजों के पास अपनी कोई भाषा व ज्ञान तो होता नहीं है तो प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि वह भाषा व व्यवहार करने का ज्ञान किससे प्राप्त करते हैं वा किससे सीखते हैं? इस प्रश्न का उत्तर वेदों को जानने वालों के लिए अधिक कठिन नहीं है। हम जानते हैं कि यह सृष्टि ज्ञान पूर्वक बनी हुई रचना है। यह स्वयं कदापि नहीं बन सकती। इसको बनाने वाली कोई पूर्ण बुद्धिमान सत्ता अर्थात् सर्वज्ञ, जो अतुल बलशाली अर्थात् सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, अनादि, अनन्त, अजन्मा, अमर, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर आदि गुणों वाली होनी सिद्ध होती है। यदि वह न होती तो यह सृष्टि या ब्रह्माण्ड न बनता। उसका दिखाई देना इस लिए आवश्यक नहीं है क्योंकि उसका निराकार, सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म व सर्वान्तर्यामी होना आवश्यक है और वह है भी ऐसी ही। उसे हम अपने ज्ञान के नेत्रों अर्थात् अन्तर्चक्षुओं से जान सकते हैं और आत्मा में विचार व चिन्तन से उसका प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार कर सकते हैं जिस प्रकार से हम फूलों की सुगन्ध न देखकर भी उसका अनुभव करते हैं और इसी प्रकार वायु को आंखों से न दिखने पर भी अपनी त्वचा द्वारा स्पर्श कर उसका अनुभव करते हैं। इसी प्रकार हमें अपने मोबाइल की घण्टी बजने पर किसी परिचित की आवाज आती है तो उस व्यक्ति के सामने न होने पर भी हमें उसका प्रत्यक्ष व प्रामाणिक ज्ञान होता है कि हमारा अमुक परिचित मित्र, सम्बन्धी या परिवार का सदस्य बोल रहा है। अतः परमात्मा का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है। उसी परमात्मा ने सभी मनुष्यों को आदि सृष्टि में बनाया था। उसी ने देखने के लिए आंखें, सुनने के लिए कान, स्वाद व शब्दोच्चार के लिए रसनेन्द्रिय अर्थात् जिह्वा व कण्ठ, स्पर्श के लिए त्वचा व सूंघने के लिए नाक व इसके साथ सत्यासत्य के विवेचन के लिए बुद्धि तथा शुभ व अशुभ संकल्पों के लिए मन आदि अवयव मनुष्य शरीर में बनाकर लिए हैं। मनुष्य लाख कोशिश कर ले, वह भाषा को नहीं बना सकते। भाषा के न होने पर ज्ञान हो ही नहीं सकता चूंकि ज्ञान भाषा में ही निहित होता है। यदि भाषा न हो तो ज्ञान व समझ उत्पन्न नहीं हो सकती। जब मनुष्य इन्हें नहीं बना सकता है तो फिर प्रश्न यह है कि यह प्राप्त किससे होती हैं। इसका सीधा व सरल उत्तर है कि आदि भाषा वैदिक संस्कृत और ज्ञान 'वेद' यह इस संसार को बनाने वाली सत्ता "ईश्वर" से मनुष्यों को प्राप्त हुए हैं। इन प्रश्नों के इन उत्तरों के अतिरिक्त हम में से किसी के पास अन्य कोई विकल्प है ही नहीं। हां, अनावश्यक काल्पनिक तर्कों का सहारा लिया जा सकता है परन्तु सत्य यही है कि यह भाषा और ज्ञान हमें ईश्वर से प्राप्त हुआ है।

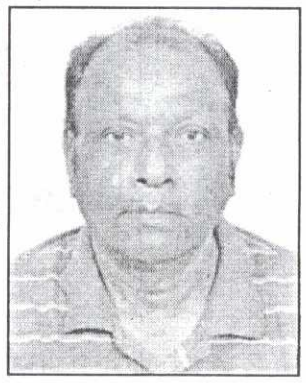

वेद संस्कृत भाषा में है जो लौकिक संस्कृत से भिन्न 'वैदिक संस्कृत' है। इन वेदों का यथार्थ अर्थ हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का किया हुआ प्राप्त है। अंग्रेजी भाषा में भी डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का किया हुआ वेदों का भाष्य हमारे पास उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के अनेक ग्रन्थ यथा सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि सहित अनेक लघुग्रन्थ जिनका आधार वेद और वैदिक साहित्य है, हमारे पास उपलब्ध है। वेदों पर आधारित प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति, 6 दर्शन तथा 11 उपनिषदें भी हमारे पास है जिनके प्रणेता ऋषि कोटि के असाधारण विद्वान् मनुष्य हैं। इतिहास के दो प्रमुख ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण तथा व्यास ऋषि कृत महाभारत भी उपलब्ध हैं। इनका अध्ययन कर वैदिक धर्म, सभ्यता व संस्कृति से परिचित हुआ जा सकता है। आज भी वैदिक धर्म, संस्कृति व सभ्यता प्रासंगिक एवं उपादेय है। हमने विगत 40 वर्षों में इन सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया है और हमें लगता है कि इनके आधार पर स्वस्थ व सुखी जीवन व्यतीत किया जा सकता है। इनके अध्ययन के साथ हम आधुनिक ज्ञान व विज्ञान का अध्ययन कर विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, शिक्षा, बैंकिंग, व्यापार, वाणिज्य आदि किसी भी क्षेत्र में अपना व्यवसाय चुनकर सफल जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

आज की सामाजिक व्यवस्था को भी जानने का प्रयास करते हैं। आज हमारे देश व संसार में अनेक मत-मतान्तर, धर्म, मजहब, सम्प्रदाय आदि हैं। यह सभी संसार के लोगों को अपने-अपने मत का अनुयायी बनाने का प्रयास करते हैं। ईश्वर के एक होने पर भी सबकी अपनी-अपनी भिन्न-भिन्न विचारधारायें, मान्यतायें, सिद्धान्त तथा उपासना पद्धतियां हैं। किसी को भी इस बात से कोई सरोकार नहीं दिखता कि उनके द्वारा की जाने वाली क्रियाओं व उपासना पद्धतियों से ईश्वर प्रसन्न होता है अथवा नहीं? ईश्वर क्या चाहता है किसी मत के द्वारा जानने का प्रयास नहीं किया जाता है। वैदिक मत व धर्म में यह प्रयास अवश्य किया गया है। उनके अनुसार ईश्वर सभी जीवों का सुख चाहता है इसीलिए उसने सृष्टि को बनाया और आरम्भ में ही संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु वेदों का ज्ञान दिया जिसमें ईश्वर की ओर से मनुष्यों के कर्तव्यों का उल्लेख है। इन वैदिक कर्तव्यों की व्याख्यायें दर्शन, उपनिशद् व मनुस्मृति ग्रन्थों में भी दी गई है। वेदों के ज्ञान का महत्व इसलिए सर्वाधिक है क्योंकि मनुष्य का आत्मा जन्म व मरणधर्मा है। इसका अर्थ है कि यह सृष्टि काल में जन्म-मृत्यु-जन्म के चक्र में बन्धा हुआ होता है, जन्म के बाद पूर्व जन्मों में किए हुए कर्मानुसार आयु, जाति व सुख व दुःखों को प्राप्त कर भोगता है और कुछ समय बाद मृत्यु को प्राप्त होता है। मृत्यु के बाद पुनः पूर्व व इस जन्म के शेष कर्मों के आधार पर नया जन्म मिलता है। यह जन्म किये हुए कर्मों के अनुसार होता है। यह सम्भव है कि हम अगले जन्म में मनुष्य बने और यह भी सम्भव है कि हम पशु, पक्षी, कीट व पतंग में से किसी योनि या जाति प्रजाति में पैदा हों। हमारा भावी जन्म मनुष्य योनि में अच्छे सुशिक्षित व सुखी परिवारों में हों जहां हम सत्कर्मों को करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करें, इसके लिए ही वैदिक कर्तव्यों का पालन करने का विधान है।

सृष्टि के आदि काल में मनुष्यों की उत्पत्ति एवं वेदों के प्रादुर्भाव से ही काल गणना आरम्भ कर दी गई थी जो अद्यावधि जारी है। इस समय सृष्टि संवत् 1,96,08,53,115 चल रहा है। इस लम्बी अवधि में अब से लगभग 5,100 वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। युद्ध में बहुत बड़ी संख्या में जनहानि हुई जिस कारण युद्ध के बाद सर्वत्र अव्यवस्था फैल गई। विगत 5000 वर्ष में देश के ज्ञानी वर्ग के आलस्य, प्रमाद आदि अनेक कारणों से वेदों का ज्ञान लुप्त हुआ जिससे अन्ध-विश्वास, अवैदिक परम्परायें व कुरीतियां प्रचलित हो गईं। अज्ञान व कुछ अन्य कारणों से पूर्ण अहिंसात्मक यज्ञों में पशुओं की हत्यायें की जाने लगीं। स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया।

क्रमशः अगले अंक में....

thearyasamaj.org

स जातो येन जातेन वंशः याति समुन्नितम्

❑ इन्द्रजित्देव

श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री राजवीर शास्त्री जी नहीं रहे। यह समाचार आर्यजगत् में ज्यों ही फैला, त्यों ही यत्र-तत्र शोक छा गया। यह आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है, परन्तु वे अपने लेखों, विशेषांकों व ग्रन्थों के माध्यम से हमारे मध्य जीवित रहेंगे। ऐसी पुण्यात्मा को शतशः श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निवेदन है कि उन जैसे प्रौढ़ विद्वान् कभी कभार ही संसार में होते हैं।

वे लोकैष्णा व वित्तैष्णा से बहुत दूर थे। इसके प्रमाण उनके जीवन से मिलते हैं। निवेदन है कि सान्ताक्रुज (मुम्बई) प्रति वर्ष वैदिक विद्वानों को पुरस्कृत करता है। एक बार उसने आचार्यवर श्री राजवीर शास्त्री को भी पुरस्कृत करने की जब सूचना उन्हें दी तो आचार्य जी ने स्व० उत्तमचन्द 'शरर' जी को यह पुरस्कार देने का अनुरोध उक्त समाज को किया क्योंकि 'शरर' जी (पानीपत) रोगग्रस्त व उन्हें धन की शीघ्र आवश्यकता है। अतः 'शरर' जी को पहले पुरस्कार दिया जाना चाहिए। आर्यसमाज, सान्ताक्रुज ने उनका प्रस्ताव मान लिया तथा पुरस्कार प्रो० जी को ही दिया था। आगामी वर्ष वह पुरस्कार आचार्य जी को दिया परन्तु उन्होंने यह समाचार अपने सम्पादकत्व में छप रही पत्रिका 'दयानन्द संदेश' में छपने नहीं दिया। मुझे ज्ञात हुआ कि उन्हें पुरस्कार प्रदान किया गया है तथा सान्ताक्रुज, आर्यसमाज मुम्बई में उस अवसर पर एक उच्चकोटि का वक्तव्य भी आचार्य जी ने दिया था। वह वक्तव्य भी मैंने उस समाज की पत्रिका 'निष्काम परिवर्तन' में पढ़ा। मेरी संभावना थी कि वह समाचार तथा वक्तव्य 'दयानन्द संदेश' में भी छपेगा परन्तु ऐसा हुआ नहीं। कहाँ आर्यसमाज के कथित वैदिक प्रवक्ता, आचार्य व उदरार्थी उपदेशक तथा कहाँ श्री राजवीर शास्त्री जी। मेरे तथा मेरे जैसे कुछ अन्य प्रशंसकों के विनम्र अनुरोध पर ही आचार्य जी ने उक्त समाचार व वक्तव्य को 'दयानन्द संदेश' के कुशल सम्पादक रहे परन्तु अवैतनिक।

सरल व निरभिमानी शास्त्री जी पत्रिका में प्रामाणिक शंका-समाधान तथा पुस्तक-समीक्षा का सफल व उपयोगी कार्य भी करते थे। सृष्टिसंवत् विषयक आर्यसमाज के विद्वानों का परस्पर मतभेद अब बहुत ही कम रह गया है तथा अपवाद रूप कुछ को छोड़कर सभी पत्रिकाओं, लेखकों व विद्वानों ने आचार्य राजवीर जी द्वारा प्रतिपादित सृष्टि संवत्सर (वर्तमान 1,96,08,53,115) को मान्यता दे दी है। कई वर्षों तक आचार्य जी इसके लिए प्रयास करते रहे हैं। 'दयानन्द संदेश' का एक विशेषांक भी इस विषय में प्रकाशित किया गया था। आयु निश्चित है अथवा नहीं, इस विवादित विषय पर भी एक विशेषाङ्क को उन्होंने सम्पादित किया था। सत्यार्थप्रकाश विशेषाङ्क यथार्थ वेदान्त विशेषाङ्क, जीवात्मा ज्योति विशेषाङ्क, मनुस्मृति अनुशीलन विशेषाङ्क, वैदिक मनोवैज्ञानिक विशेषाङ्क, गोपाष्टमी विशेषाङ्क, मर्यादा पुरुषोत्तम राम विशेषाङ्क तथा कुछ अन्य विशेषांक आर्यसमाज की संग्रहणीय सम्पत्ति हैं। इनमें अधिकतर विशेषाङ्क उनके ही द्वारा लिखित हैं।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के ग्रन्थ लेखन, सम्पादन एवं संशोधन के कार्यों में उनका गहन सहयोग प्राप्त होता रहा है जिसके फलस्वरूप अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हो पाए। इनमें संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपदेश मञ्जरी, आर्याभिविनय, दयानन्द वैदिक कोष, यजुर्वेद देवतार्थ विषय सूची, महर्षि दयानन्द वेदार्थ प्रकाश, योगमीमांसा, पातञ्जल योगदर्शन भाष्यम्, विशुद्ध मनुस्मृति, षड्दर्शन पदानुक्रमणिका तथा ईश, केन व कठ उपनिषद् भाष्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। 'सरिता' तथा अन्य अवैदिक पत्रिकाओं में जब कभी वैदिक सिद्धान्तों पर आक्षेप पूर्ण लेख छपते थे तो पूज्य आचार्य जी बहुत निर्भय, सत्याधारित, प्रामाणिक व अमित ज्ञान-विज्ञान पर आधारित निबन्धों से प्रभावशाली उत्तर भी दिया करते थे। अन्त में व्यक्तिगत निवेदन=लगभग 25-26 वर्ष पूर्व मेरा लेखन-कार्य आरम्भ हुआ था। इस मध्य मैंने 25-30 लेख उन्हें प्रकाशनार्थ प्रेषित किये जिनमें से एक लेख डाक में खो जाने से प्रकाशित नहीं हो पाया। शेष सभी लेखों को अपनी पत्रिका में उन्होंने स्थान देकर मेरा उत्साहवर्धन ही किया। गुरुकुल, आमसेना (उड़ीसा) के एक वार्षिकोत्सव के अवसर पर वहां के एक कक्ष में एवं एक वेदी पर उनके चरणों में रहने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। सत्याग्रह्यता, निश्छलता, निरभिमानता, मितभाषिता, गहन गम्भीरता व मुझ जैसे अकिंचनों को प्रोत्साहित करने के गुणों से विभूषित पुण्यात्मा आचार्यवर को पुनः-पुनः श्रद्धाञ्जलि।

परिवर्तिनी संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन वंशः याति समुन्नतिम्॥

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में जन्म एवं मृत्यु का क्रम तो सदैव चलता ही रहता है किन्तु जन्म उसी का सार्थक है जिसके जीवन से उसका वंश, देश व जाति उन्नति को प्राप्त होती है—

मौत उसकी, जिसका ज़माना करे अफ़सोस।
यूँ तो कई आते हैं, जाते हैं एक-न-एक दिन॥

संपर्क-चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर 09466123677

मांगे यह वरदान

हाथ जोड़ झुका के मस्तक, मांगे यह वरदान प्रभु।
द्वेष मिटाएँ प्रेम बढ़ाएँ, नेक बनें इन्सान प्रभु॥
भेदभाव सब मिटे हमारा, सबको दिल से प्यार करें।
जाए नजर जिस ओर हमारी, तेरा ही दीदार करें।
पल-पल छिन-छिन करें हमेशा, तेरे ही गुणगान प्रभु॥
दुःख में कभी दुःखी ना होवें, सुख में सुख की चाह न हो।
जीवन के इस कठिन सफर में, कांटों की परवाह न हो।
रोक सकें न पाँव हमारे, विघ्नों के तूफान प्रभु॥
दीन दुःखी और रोगी सबके दुःखड़े निशदिन दूर करें।
पौंछ के आँसू रोते नैना हँसने पर मजबूर करें।
तव चरणों की सेवा करते, निकले तन के प्राण प्रभु॥
तेरे वेदज्ञान से जग का दूर अन्धेरा कर दें हम।
सत्य प्रेम की मीठे रस से, सबका जीवन भर दें हम।
'वीर' धीर बन जीना सीखें, हम तेरी सन्तान प्रभु॥

(2)

दुनिया के प्यार में क्या रस है, जब प्यार पिता से पा न सका।
यह जन्म तभी तक बन्धन है, जब तक दुःख में गा न सका॥
है भक्ति तभी प्रभु चरणों में, विश्वास अटल जब जम जाए।
क्या भगत है वो तूफानों को, आभार न उसके मान सका॥
है पूजा यही, जो भी कुछ है, जगदीश के अर्पण कर देना।
वह पूजा नहीं आडम्बर है, दिल में जो हिलोरें ला न सका॥
हूँ इन्द्र मैं जग के सारे विषय, मिलकर भी मुझे न हरा सके।
वह चेतन क्या जड़ जगती को, जीवन में जो ना जीत सका॥
इस जन्म का संचित धर्म सदा, पर-जन्म की पूँजी बनता है।
उस जन्म में जीव क्या लायेगा, इस जन्म में जो वो कमा न सका॥
हे 'सत्य' मुझे तू बना ले सखा, दुनिया न कभी दुत्कार सके॥
जग अपना बनाकर क्या होगा, गर तुझको ही अपना बना न सके॥

(3)

जिधर देखो उधर प्रगति की राह रुक रही है।
हर बसर के पेट में कुर्सी फुदक रही है.... ॥
बाहर उजालापन लिये हैं नीयत के खोटे बड़े।
मुख में राम बगल में छुरी दुबक रही है। कुर्सी फुदक रही है.... ॥
चाहते हैं बिना पंख के ऊँची उड़ान भरना।
मेंढकी के पैर में तनहाल ठुक रही है। कुर्सी फुदक रही है.... ॥
पैंदी बगैर लोटा जाता है लुढ़क अक्सर।
है अचम्भा पैंदी वाली लुटिया लुढ़क रही है। कुर्सी फुदक रही है.... ॥
प्रकावान पथ पर चलना नहीं सुहाता।
हैं जा रहे वहाँ पर अंधेरी झुक रही है। कुर्सी फुदक रही है.... ॥
वक्त की धार को समझे नहीं कोई क्योंकर।
चूल्हा पड़ा है ठण्डा हाण्डी खदक रहीं है। कुर्सी फुदक रही है.... ॥

रचयिता : स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

thearyasamaj.org

दर्शन-दिग्दर्शन

गतांक से आगे....

मीमांसा-वैदिक वाङ्मय में मीमांसा शब्द दो दर्शनों के साथ संयुक्त होता है। अत एव पूर्वमीमांसा तथा उत्तरमीमांसा के नाम से उनको क्रमश: स्मरण किया जाता है और कुछ इन दोनों के अध्यायों की गणना समवेत रूप में करते हैं। इन दोनों का समारम्भ जिज्ञासा से है। जैमिनि दर्शन धर्म की जिज्ञासा का समाधान करता है, तो वेदव्यास का वेदान्त ब्रह्म जिज्ञासा को शान्त करता है। इन दोनों की विश्लेषण प्रक्रिया भी एक समान है। अत: मीमांसा शब्द यहां उधेड़बुन, विश्लेषण, विवेचन, जचाव अर्थ में है। तभी तो इन को वाक्यविद्या का आकार ग्रन्थ कहा गया है। जैसे एक यन्त्र को ठीक करने वाला यन्त्र के पुर्जों को खोलकर प्रथम त्रुटि (गड़बड़) का बोध करता है, पुन: उसको ठीक करके यन्त्र की संगति लगाता है। ऐसे ही मीमांसा में अपने उपजीव्य शास्त्र के वाक्यों का विश्लेषण करके श्रुति, लिङ्ग, प्रकरण आदि के आधार पर संगति दर्शायी जाती है।

वैदिक वाङ्मय में वेदों के पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थों का क्रम है, आरण्यक अधिकतर ब्राह्मणों के ही भाग हैं। इसके अनन्तर उपनिषदों की परिगणना होती है। वेद ईश्वरीय नित्यज्ञान है, उनके व्याख्यान रूप ब्राह्मण रचना काल की दृष्टि से पूर्ववर्ती हैं, तो उपनिषदें उत्तरवर्ती। अत: पूर्वमीमांसा का ब्राह्मण ग्रन्थों के वाक्यों से सम्बन्ध है और वेदान्त में उपनिषदों के वाक्यों की मीमांसा है। धार्मिक कर्मकाण्ड रूपी यज्ञ ही ब्राह्मणग्रन्थों तथा पूर्वमीमांसा दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य है, तो ब्रह्म=ईश्वर-उपनिषद् और वेदान्त का मुख्य विवेच्य विषय है। वेदों में मुख्य रूप से इन दोनों तथा उपनिषदों में इन दोनों को अपना-अपना व्याख्यात तत्त्व बनाया है।

पूर्वमीमांसा में वेद प्रतिपादित धर्म=कर्म=यज्ञ की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए ब्राह्मणों के परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले वाक्यों की मीमांसा करके संगति दर्शायी गई है। हाँ, दार्शनिक विवेचन की दृष्टि से इस दर्शन में शब्द प्रमाण रूप **वेद** के स्वरूप का और कर्मफल व्यवस्था को हृदयङ्गम कराने के लिए **अपूर्व** का भी विवेचन है।

वेदान्त-वेदान्त दर्शन के प्रथम सूत्र में ब्रह्म को जानने की इच्छा प्रकट की गई है। इसके समाधान के रूप में दूसरे सूत्र में कहा है कि इस दृश्य-अदृश्य संसार का जन्म, संचालन, संहार जिसके निमित्त से होता है, वही ब्रह्म है। तृतीय सूत्र का भाव है कि ब्रह्म जहां जगत का कर्त्ता, धर्त्ता, संहर्त्ता है, वहाँ वह वेद-शास्त्र का प्रतिपादक भी है तथा सारे शास्त्र भी ब्रह्म को ही जगतकर्त्ता आदि रूप में प्रतिपादित करते हैं।

इन दोनों अर्थों के आधार पर चतुर्थ सूत्र में कहा है—वह कर्त्ता अपने कार्य में कला के रूप में सर्वत्र समन्वित, सर्वव्यापक है। हाँ, इस सूत्र का तीसरे सूत्र के दूसरे अर्थ के अनुसार यह अभिप्राय भी है कि सारे शास्त्रों में सर्वत्र जगत कर्त्ता के रूप में ब्रह्म का ही समन्वय, समर्थन दर्शाया गया है।

इस भूमिका के पश्चात् बड़े विस्तार से अग्रिम सूत्रों में दर्शाया गया है कि उपनिषद् आदि में जहाँ कहीं प्राण, अन्न, आत्मा, आकाश आदि शब्द आए हैं, इनके द्वारा तत्तत्प्रकरण के अनुरूप भाव बोधार्थ वह-वह शब्द ब्रह्म का ही वाचक है, क्योंकि यह जगत उत्पादन, धारण आदि की क्रिया ब्रह्म के माध्यम से ही सम्पन्न हो सकती है। जब शास्त्रों में सर्वत्र निर्दिष्ट क्रिया एक ही है तो उसका कर्त्ता भी सर्वत्र एक ही आदिष्ट होना चाहिए। तत्-तत् स्थलों के विशेषणों से भी यही परिपुष्ट होता है, क्योंकि वे विशेषण ब्रह्म में ही चरितार्थ होते हैं।

हाँ, इस दर्शन के अग्रिम भाग में ब्रह्म के स्वरूप की विवेचना के साथ जगत् तथा जीव, उसके शरीर आदि का भी विश्लेषण आया है।

इस प्रकार इन वैदिक दर्शनों में अनेक दार्शनिक तत्त्वों का विश्लेषण प्राप्त होता है।

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8 से 9 नवम्बर 2014
2.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14 से 16 नवम्बर 2014
3.	आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव	14 से 16 नवम्बर 2014
4.	आर्यसमाज जीन्द शहर	21 से 23 नवम्बर 2014
5.	आर्ष योग संस्था सैक्टर-76, फरीदाबाद	23 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

आर्यसमाज होशंगाबाद का 103वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) का 103वां वार्षिकोत्सव दिनांक 5,6,7 दिसम्बर 2014 को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यात नाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

—आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, सचिव,
आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) 461001

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@gmail.com

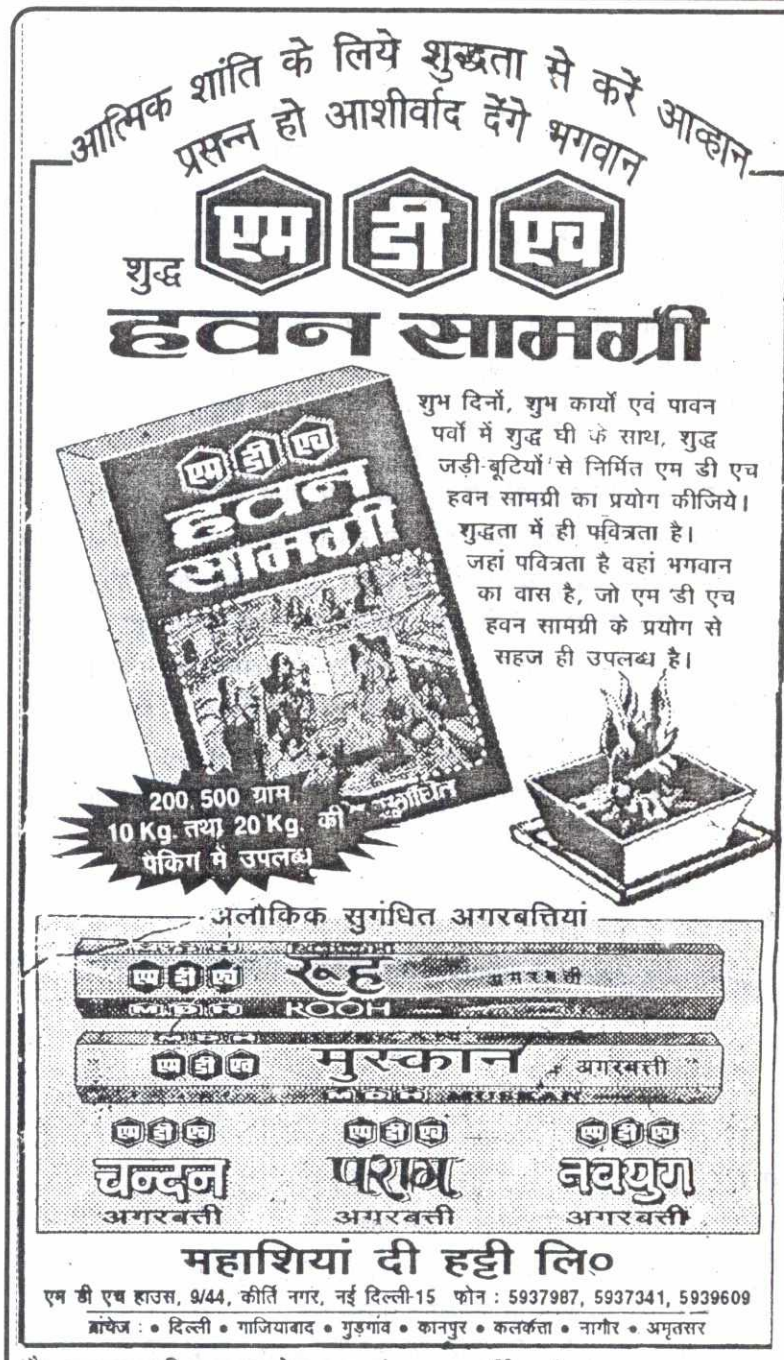

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

गुरुकुल के सात निशानबाजों का राष्ट्रीय स्तर पर चयन

गुरुकुल के निशानबाजों ने बढ़ाया जिला का मान

चयनित शूट्र्स के साथ गुरुकुल के प्रबंध कमेटी के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य देवव्रत आचार्य, कोच बलबीर सिंह व सतपाल सिंह देशवाल।

22 अक्तूबर 2014, कुरुक्षेत्र गुरुकुल के सात शूट्र्स ने राष्ट्रीय एयरगन चैंपियनशिप पूणे हेतु राज्य स्तरीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में सात मेड़लो पर कब्जा करके अपना नाम दर्ज करवाया। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने बाताया कि 19 अक्तूबर से 21 अक्तूबर को बी.आर. इण्टर नेशनल पब्लिक स्कूल में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हुई, जिसमें गुरुकुल के सात शूट्र्स ने पदक पर कब्जा करके राष्ट्रीय एयरगन चैंपियनशिप पूणे के लिए जगह पक्की की। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता में पूरे हरियाणा से कुल 238 शूट्र्स ने भाग लिया था जिनमें से सिर्फ 27 शूट्र्स का चयन होना था जिसमें अकेले गुरुकुल के ही सात शूट्र्स हैं। प्राचार्य ने यह भी बताया कि अभी हाल ही में मार्च 2014 में सम्पन्न हुए सातवीं अंतर्राष्ट्रीय एशियन एयरगन चैंपियनशिप जो कुवैत में सम्पन्न हुआ उसमें गुरुकुल के गौरव कुमार ने रजत पदक पर कब्जा करके देश का मान बढ़ाया। गुरुकुल के प्रबंध कमेटी के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य व सतपाल सिंह ने शूट्र्स के चयन पर खुशी व्यक्त करते हुए शूटिंग कोच बलबीर सिंह को बधाई व शुभकामनाएँ दीं।

वार्षिक उत्सव एवं वेदोपदेश सम्पन्न

दिनांक 12-13 अक्तूबर 2014 को आर्यसमाज मन्दिर पालिका कालोनी भिवानी रोड रोहतक का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ किया गया। अनेक आर्य दम्पति यजमान तथा अनेक विद्वानों ने यज्ञ को बड़े श्रद्धा से सम्पन्न किया। कार्यक्रम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की उपस्थिति अच्छी रही।

इसी प्रकार दिनांक 22-23 अक्तूबर को सैक्टर-4 रोहतक में वैदिक सम्मेलन मनाया गया। आचार्य जी के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। अनेक यजमान दम्पति तथा आर्यों ने श्रद्धा से विशेष यज्ञ में सम्मिलित हुए।

आचार्य जी ने वेदों के अनेक मन्त्रों द्वारा समझाया कि वैदिक संस्कृति में आज भी जो कुछ भी बचा है उसका मूल घर के चूल्हे तक कर्मकाण्ड का प्रचार है। पाश्चात्य जगत् में ये कर्मकाण्ड नहीं हैं तो वहां न समाज है, न परिवार है। भारत में आज भी गुरु-शिष्य, भाई-बहन, पति-पत्नी का आत्मीय नाता है। कार्यक्रम का आयोजन रवीन्द्र आर्य व मित्रों द्वारा हुड्डा पार्क में किया गया।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

एक मुलाकात स्वामी दयानन्द से.... पृष्ठ 2 का शेष....

में फँसते नहीं जा रहे हो? क्या तुमने अपने बच्चों को आर्य-संस्कारों से संस्कारित किया?

(28) तुम सदैव तो अपने आप में आर्यसमाज का लबादा ओढ़ रहे हो परन्तु उस समय तुम्हें क्या हो जाता है जब तुम अपने किसी बच्चे का विवाह करने जाते हो तो मुहूर्त पूछते रहते हो। ज्योतिषियों के चक्कर में पड़कर तुम अपने बच्चों का भविष्य खराब नहीं करते हो?

(29) अब तो तुम अपने पुत्र/पुत्री के गुण और जहाँ उनका विवाह करना हो उसकी पुत्री/पुत्र के गुण मिलाने लगे हो। क्या यह पाखण्ड की पराकाष्ठा नहीं है?

(30) कोई भी जीव इस संसार में आता है वह अपने कर्म साथ लाता है परन्तु तुम उसके विवाह के समय पाखण्डी पण्डितों के कहने से मंगली, मंगला आदि कहकर उन बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ नहीं करते हो?

(31) मैंने सत्यार्थप्रकाश में विवाह के समय पुत्र और पुत्री के लिए कौन-कौन-सी सावधानियाँ बताई थी? माता और पिता की कई पीढ़ियां छोड़कर विवाह करने की बजाय तुमने अपने बच्चों के विवाह अत्यधिक निकट संबंधियों के साथ करने प्रारम्भ नहीं कर दिये हैं?

(32) मैंने तुम्हें अपनी संतानों में अच्छे-अच्छे संस्कार डालने की प्रेरणा की थी, क्या तुमने कभी अपने बच्चों को धर्म, कर्म की बात, आचार-व्यवहार की बात, राष्ट्रप्रेम से सम्बन्धित वीरों की गाथायें सुनाने का प्रयास किया? यदि नहीं तो क्या तुमने मेरे साथ विश्वासघात नहीं किया? तुमने उनके हाथों में वैचारिक क्रान्ति के भाव भरने की बजाय उनके हाथों में मोबाइल, लैपटॉप, टेबलेट दे दी जिससे वह इनके लाभों की बजाय इसमें छिपी गन्दगी देख-देखकर अपने ब्रह्मचर्य का नाश कर रहे हैं? कभी इस पर विचार किया?

(33) मैंने तुम्हें अन्तर्जातीय विवाह करने का आदेश दिया था परन्तु सोचो कि क्या तुम जाटवाद, अहीरवाद, बनियावाद, पंजाबीवाद आदि-आदि वादों में नहीं पड़ गये हो? क्या तुम विवाह के समय गुण, कर्म, स्वभाव देखने की बजाय जातिवाद को महत्त्व नहीं देने लग गये हो?

आर्य जी,

क्या आज आर्यसमाज के अधिकांश लोग मेरे नाम को व्यापार बनाकर धन बटोरकर मौज-मस्ती नहीं ले रहे हैं? आर्यसमाज मन्दिरों की दशा, वातावरण व परिस्थिति देखकर दु:ख होता है। क्या मेरे किये हुए कर्मों का प्रतिदान यही है? क्या यही स्मरण है? क्या यही श्रद्धांजलि है? यदि यही है तो आर्यो! मुझे क्षमा करो। मुझे यह आशा न थी जिस रूप में आज आर्यसमाज है और जिस दशा में जा रहा है, इसका यह हाल होगा। मैं लज्जित होकर अपनी आंखें धरती में गाड़े हुए था क्योंकि जो भी प्रश्न स्वामी दयानन्द जी ने उठाये थे वह सब सत्य थे, मेरे पास कोई उनका उत्तर नहीं था। मुझे अधिक परेशानी की स्थिति में देखकर स्वामी जी एक बार पुन: मुस्कुराये और कहने लगे निराश होने की कोई बात नहीं। निराशा से कुछ नहीं मिलेगा आज और अभी यह निर्णय करो कि मैं स्वयं सुधरने का प्रयास करूँगा, पूरे परिवार को सुधारूँगा, तो वह दिन दूर नहीं जब मेरी वेदरूपी ज्वाला एक बार मशाल बनकर संसार का कल्याण करेगी। यह कहते ही वह उठे और बाहर चले गये। मेरी आँखों में आँसू थे। इतनी देर में श्रीमती जी आती हैं और कहती हैं कि उठिये प्रात:काल के 5 बजे हैं, कब तक सोते रहोगे?

मैं चौक उठा। अरे! यह क्या? यह तो एक स्वप्न था परन्तु इस स्वप्न को मैं अपनी सम्पत्ति बनाकर संजाये रखना चाहता हूँ। स्वप्न में ही सही, जो प्रश्न स्वामी दयानन्द जी ने मुझसे किये, उनके अनुसार मैं अपने जीवन में कुछ परिवर्तन ला सकूँ, इसी विश्वास के साथ मैं उठा और दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गया।

मैं सोचने लगा कि आज का यह स्वप्न एक स्वप्न बनकर रह जायेगा या मैं अपने में कुछ परिवर्तन भी लाऊँगा। यदि मैं अपने जीवन में इन उठाये हुए प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ सका तो मैं अपने जीवन को सार्थक बना सकूँगा। मुझे अनुभव हुआ कि यह केवल मेरा स्वप्न नहीं बल्कि उन सभी निष्ठावान् आर्यों की एक पीड़ा है जो मेरे स्वप्न के माध्यम से सामने आई है। प्रभु से प्रार्थना है कि हमे इतनी शक्ति दे कि हम आर्यजन इनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ सकें, ताकि हम आर्यसमाज के लिए समस्या नहीं समाधान बन सकें और आर्यसमाज को स्वामी दयानन्द सरस्वती के सपनों का संगठन बनाये रख सकें।

संपर्क-4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा, चलभाष-09911197073

thearyasamaj.org

उपास्य कौन और क्यों?

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

आजकल इस गंभीर विषय पर बहुत हल्के स्तर पर चर्चा के नाम पर एक दूसरे पर दोषारोपण चल रहा है। ऐसा लगता है जैसे दलदल में खड़े लोग एक दूसरे पर कीचड़ उछाल रहे हैं। इनकी अपनी कोई पहचान शेष नहीं बची बस कीचड़ सने चेहरे और कीचड़ सने हाथ। पूरी बहस में कोई सत्य सुनने को तैयार नहीं लगता है जैसे अंधेरा अंधेरे से लड़ रहा हो। इस पूरे झगड़े में आखिर उपास्य कौन हम मनुष्य किसकी उपासना करें इसका उत्तर देने को कोई तैयार नहीं। सबके अपने निहित स्वार्थ हैं और राष्ट्र के नाम पर एकजुट हो रहे समाज को उनकी आस्था के संवेदनशील मुद्दे पर तोड़ने की गहरी साजिश हो रही है।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि आखिर उपास्य कौन, सभी मनुष्य किसकी उपासना करें और किस सभी को स्वीकार्य एक उपासना पद्धति से टूटते बिखरते समाज को एकजुट किया जा सके। इन गंभीर विषयों पर चिन्तन करते हुए हम पाते हैं कि क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने जैसे इन आने वाली समस्याओं को पहले ही भांप लिया था। शायद इसीलिए महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वर्णन करते हुए स्पष्ट निर्देश दिया कि उसी की उपासना करनी योग्य है। ईश्वर के सत्य स्वरूप का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। महर्षि दयानन्द ने एक सत्य ईश्वरीय स्वरूप की कसौटी हमारे सामने रख दी। अब यदि हम आपस में लड़ने वाले सभी लोग अपनी अन्ध श्रद्धा के कूप से बाहर आकर ईश्वर के विराट सत्य स्वरूप पर अपने-अपने तथाकथित देवताओं, अवतारों, स्वयंभू धर्म के ठेकेदारों को कसेंगे तो पायेंगे ईश्वर के स्वरूप की कसौटी के निकट भी कोई नहीं फटकता। यदि हम थोड़ा और चिंतन करें तो पायेंगे कि इनमें से अधिकांश ने अपने-अपने जीवन काल में ऊपर वर्णित ईश्वर के सत्य स्वरूप की ही उपासना की। वह तो स्वयं उसी एक ईश्वर के उपासक थे। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हमने उनके जीवन से ज्ञान लेने के स्थान पर अपनीअंध श्रद्धा के वशीभूत इन भक्तों को ही भगवान् बना दिया और सच्चे उपास्य देव को भूल बैठे।

आखिर क्या कारण था कि हम अपनी श्रेष्ठतम पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति को भूल गए और इतना अधिक भटक गए उस एक ईश्वर के सत्य स्वरूप को भूलकर हमने अपनी-अपनी कल्पनाओं के भगवान गढ़ लिए और बिना उन्हें सत्य की कसौटी पर कसे उनकी उपासना अलग-अलग पद्धति से प्रारम्भ कर दी। पहले जहां हमारी अबोधता से हमने अपने लिए अलग-अलग तथाकथित भगवान बनाये और फिर अलग-अलग पूजा पद्धतियां विकसित करते हुए हम अलग-अलग पंथों संप्रदायों में कबीलों की तरह बंट गए। यह अलग-अलग पंथ संप्रदाय अब एक दूसरे पर दोषारोपण करते आपस में लड़ने लगे। जैसी स्थिति आज वर्तमान समय में एक बार फिर बन चुकी है।

अब हमें गंभीरता से चिंतन करना होगा कि हमें इस असत्य, पाखण्डों, अंधविश्वासों, कुरीतियों की अंधी श्रद्धा में फँसाकर आपस में लड़वाने वाले कौन हैं और इसके पीछे उनके क्या निहित स्वार्थ हैं। मुगलों के शासनकाल से ही इस समाज को तोड़ने की गहरी साजिश प्रारम्भ हुई थी और फूट डालो राज्य करो की नीति का अनुसरण अंग्रेजी शासनकाल में भी हुआ। हम कहने को वर्ष 1947 में स्वतन्त्र हो गए पर शायद मानसिक गुलामी की अवस्था से बाहर नहीं निकल पाए और आज भी असत्य के अंधेरे कुएं में मेंढकों की तरह टर्रा रहे हैं और आपस में लड़कर खुश हैं। अलग-अलग नवीन पंथों संप्रदायों में बंटे हम सभी केकड़ा संस्कृति के अनुगामी हो चुके हैं। जिसमें खुले बर्तन में भी कोई केकड़ा उससे बाहर नहीं आ पाता क्योंकि दूसरा उसकी टांग खींच लेता है और सभी बाहर निकलने का अवसर होने के बावजूद उसी में फँसे रहने के लिए अभिशप्त हैं।

आज यदि हम इन पंथों, संप्रदायों, डेरों, तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के चंगुल से बाहर निकलकर एकजुट होकर अपने परिवार समाज वा राष्ट्र के उत्थान में लगना चाहते हैं तो हमें इन कबीलों के बन्धनों को छोड़कर ईश्वर के सत्य स्वरूप को समझकर उसी की उपासना करनी होगी और अपनी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति को पुन: स्वीकार करके आर्यों की एक उपासना पद्धति जिसे देव दयानन्द ने गहन अध्ययन चिंतन के उपरान्त पुन: स्थापित किया है उसे स्वीकार करके एकजुटता के साथ परिवार वा राष्ट्र के उत्थान में जुट जाना होगा।

-602 जी एच 53 सै०-20, पंचकूला
09467608686, 0172-4001895

ईश्वर से मांगने योग्य वस्तु केवल.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

कितनी ही शर्मनाक व अशोभनीय बात शिव जी व पार्वती जी के विषय में कही गई है। पुराण बनाने वाले की बुद्धि तो भ्रष्ट थी ही, परन्तु इस अशोभनीय बात को प्रेक्टिकल रूप देकर पूजा करवाने वालों ने तो उससे भी ज्यादा घिनौना कार्य किया है और जो इस कार्य को अर्थात् शिवलिंग पूजा को किये जा रहे हैं, वह पूजा नहीं घोर पाप कमा रहे हैं। आदिगुरु शंकराचार्य मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक परा पूजा में लिखते हैं—

तीर्थेषु पशु यज्ञेषु काष्ठ पाषाण मृण्मये।
प्रतिमायां मनो येषां तो नरा मूढ चेतसः॥

तीर्थों में, पशुओं की बलि दिये जाने वाले यज्ञों में तथा लकड़ी, पत्थर और मिट्टी से बनी मूर्तियों में जिनका मन लगा है वे मनुष्य मूढमति हैं। वे परमात्मा के स्वरूप को जानते भी नहीं और कोई बतलाना चाहे तो आश्चर्य की बात यह है कि लाख समझाने पर मानते भी नहीं।

महर्षि दयानन्द सत्य कहा करते थे कि जड़ (मूर्तिपूजा) की पूजा करने से बुद्धि भी जड़ हो जाती है, यह बात सौ प्रतिशत सत्य है और महर्षि दयानन्द ने तो सत्य को जनता के सम्मुख रखने के लिये सत्यार्थप्रकाश को लिखा, उनका इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य उद्देश्य ही सत्यासत्य को जताना था। परन्तु पाखण्डियों ने इन प्रतिमाओं की पूजा की आड़ में अच्छा व्यवसाय पनपा रखा है और बड़ी-बड़ी गाड़ियों में चलते हैं, बहुत से उद्योगपतियों के पास भी ऐसी लग्जरी (बहुमूल्य) गाड़ियों का अभाव है। कौन समझाये कि परमात्मा का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव क्या है?

एष सर्वेषु भूतेषु गुढोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते तु अग्रयूया बुद्धया सूक्ष्मदर्शिभिः॥
(कठोपनिषद्)

वह परमात्मा सब प्राणियों, अप्राणियों में छुपा हुआ है अर्थात् व्यापक है। वह सामने नहीं है क्योंकि वह निराकार है, इसलिये आंख उसे देख नहीं सकती। वह अति सूक्ष्म है, उसको सूक्ष्म बुद्धि वाले लोगअपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उसे जान लेते हैं और बुद्धिहीन प्रतिमाओं को परमात्मा मानकर पूजते ही रहते हैं। इस देश का सदैव मूर्तिपूजा से ही विनाश होता रहा है और होता ही रहेगा। उत्तराखण्ड एवं जम्मू कश्मीर की घटनाओं से भी कुछ नहीं सीखते हैं।

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक समाचार-पत्र उलट-पुलट कर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक समाचार-पत्र है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक समाचार-पत्र की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें। 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक समाचार-पत्र का वार्षिक शुल्क 150/- रु० तथा आजीवन शुल्क 1500/- रु० मात्र है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक-124001 के पते पर भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। -संपादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।